सभी प्रकार की सरकारी सहायताओं से मुक्त, खोजी पत्रकारिता का तेज बढ़ता अखबार

दैनिक

themovementofindia.in

द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया

RNI No. RAJHIN/2012/48876
पोस्टल पंजीयन नं. भीलवाड़ा / 2025-2027

खोजी खबरें-तेज नजरें

प्रेरणा स्रोत - स्व. चुन्नीलाल सालवी

ये अखबार ही नहीं क्रांति का अभियान है। मानवता एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी, ये दुष्टों की मौत का सामान है।

वर्ष - 14 अंक -41 | 06 अगस्त 2025,बुधवार | संपादक - दयाराम दिव्य | सहसंपादक - चाहत सालवी | मूल्य - 2 रू.

कैबिनेट मंत्री मदन दिलावर ने विदेशी वस्तुओं पर लगाया बैन:बोले- तीन विभागों में नहीं होगा

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भजनलाल सरकार के कैबिनेट मंत्री मदन दिलावर ने प्रदेश में विदेशी वस्तुओं की खरीद पर पूर्णतया प्रतिबंध लगा दिया है। बुधवार को शिक्षा मंत्री दिलावर ने बताया कि राजस्थान के शिक्षा विभाग पंचायती राज विभाग और संस्कृत शिक्षा विभाग में भविष्य में किसी भी तरह की विदेशी वस्तु का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। अगर कोई अधिकारी या कर्मचारी विदेशी वस्तु की खरीद करेगा। तो शिक्षा विभाग द्वारा उसे ही उसकी वसूली कर सख्त एक्शन लिया जाएगा।

खरीदने वाले पर होगा एक्शन

कैबिनेट मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि अब से शिक्षा विभाग,पंचायती राज और संस्कृत शिक्षा विभाग में सिर्फ भारत में बनी वस्तुओं की ही खरीद की जाएगी। उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग में विदेश में निर्मित वस्तुओं की खरीद पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया है। ऐसे में अगर शिक्षा विभाग का कोई भी अधिकारी कर्मचारी विदेशी वस्तु की खरीद करेगा। तो उसके खिलाफ न सिर्फ सख्त एक्शन लिया जाएगा। बल्कि, खरीद की गई

वस्तु का भुगतान भी उसी से वसूला जाएगा।

तीन विभागों में लगा बैन

दिलावर ने कहा कि हम चाहते हैं कि हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मेक इन इंडिया अभियान की परिकल्पना को साकार करें। इसी सोच के साथ हमने राजस्थान के शिक्षा विभाग पंचायती राज विभाग और संस्कृत शिक्षा विभाग में इस पहल को शुरू किया है। जिससे भारत में निर्मित सामानों का उपयोग बढ़ेगा हमारी अर्थव्यवस्था पर भी इसका सकारात्मक असर होगा। हालांकि दिलावर ने कहा कि अगर कोई ऐसी वस्तु है। जो सिर्फ विदेश में ही निर्मित होती है, और हमारे लिए अति आवश्यक है। तो उसे मंत्री स्तर पर अनुमति के बाद ही खरीदा जाएगा। इसके अलावा आज की तारीख से कोई भी विदेशी निर्मित वस्तु प्रदेश सरकार के तीनों विभागों में किसी भी स्तर पर उपयोग में नहीं ली जाएगी।

चीनी राखी का करें बहिष्कार

इस दौरान शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने राखी के पर्व पर भी स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल की अपील की। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन पर महिलाओं और बेटियों को देश के प्रति अपने कर्तव्यों को समझते हुए स्वदेशी वस्तुओं की खरीद करनी चाहिए। आप अपने भारतीय भाई बहनों के हाथों से बनी राखी को ही खरीदें। खास कर चीन से निर्मित रियो का बहिष्कार करें। उन्हें नहीं खरीदें भारत में बनी राखी खरीदने से आप सैकड़ों लोगों को रोजगार दे सकेंगे। यह पवित्र त्यौहार न सिर्फ आपके घर में खुशियां लाएगा। बल्कि, भारत के हजारों परिवारों को स्वावलंबी भी बनाएगा।

दिलावर ने कहा शेविंग ब्लेड से लेकर कोलगेट तक हम विदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसे में हमें आम जीवन में इस्तेमाल होने वाली सभी वस्तुओं में भी विदेशी वस्तुओं की खरीद पर पूरी तरह से बैन लगा देना चाहिए। सिर्फ सरकार के कुछ विभाग और राखी के पर्व पर ही नहीं बल्कि, आम जनता को भी बढ़-चढ़कर अपनी सहभागिता निभाकर विदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल करना बंद कर देना चाहिए। क्योंकि काफी विदेशी देश भारत में अपनी वस्तुओं को बेचकर हमसे मुनाफा तो कमाते हैं। लेकिन उसे धन का उपयोग पाकिस्तान की मदद के लिए करते हैं। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भी आपने देखा चीन पाकिस्तान की मदद कर रहा था। जो भारत में अपने उत्पाद बेच मुनाफा कमा रहा है।

झुंझुनूं में 25 कुत्तों की गोली मारकर हत्या:बंदूक लेकर घूमता है बदमाश, देखते ही करने लगता है फायरिंग

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

झुंझुनूं में 25 से ज्यादा कुत्तों की हत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया है। एक बदमाश बंदूक लेकर घूमता है और कुत्ता नजर आते ही गोली मारकर उनकी हत्या कर देता। कुत्तों को मारने की घटना 2 और 3 अगस्त की बताई जा रही है। इससे जुड़ा एक वीडियो सामने आते ही पुलिस हरकत में आई। मामला नवलगढ़ इलाके के कुमावास गांव का है।

इधर, मामले को लेकर लोगों में आक्रोश है। शेयर हो रहे वीडियो में कुत्तों को मरा हुआ दिखाया गया है। एक व्यक्ति बंदूक लिए हुए कुत्तों पर फायरिंग कर रहा है।

इसके बाद गांव में जगह-जगह खून से लथपथ कुत्तों के शव मिले। पुलिस के अनुसार 4 अगस्त को वीडियो शेयर होने की सूचना मिलते ही हेड कॉन्स्टेबल शुभकरण को जांच के लिए कुमावास गांव भेजा गया। पुलिस ने बताया- श्योचंद बावरिया पुत्र सुरजाराम बावरिया निवासी डुमरा ने कुत्तों को गोली मारी थी। आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस का कहना है कि मामले में आगे की जांच जारी है और जल्द ही आरोपियों को भी गिरफ्तार किया जाएगा। पूर्व सरपंच ने स्क्व को शिकायत की हमीरी कलां गांव की पूर्व सरपंच सरोज झांझड़िया ने एसपी से मुलाकात कर एक शिकायत की। शिकायत में दावा किया गया है कि आरोपी श्योचंद ने पिछले कुछ दिनों में 25 कुत्तों को बेरहमी से मार डाला है। पूर्व सरपंच के अनुसार आरोपी का यह दावा झूठा है कि कुत्तों ने उसकी बकरियों को मार डाला था। उन्होंने बताया कि कुत्तों ने न तो किसी को नुकसान पहुंचाया था और न ही किसी की बकरियों को मारा था। उन्होंने आरोप लगाया कि श्योचंद और उसके साथी बकरियां मर गई का झूठा बहाना बनाकर मुआवजे की मांग कर रहे हैं, जिससे उनकी गलत मंशा जाहिर होती है।

उन्होंने आशंका जताई कि यह एक सोची-समझी साजिश का हिस्सा है, क्योंकि यही समूह 5 महीने पहले भी गांव आया था।

अजमेर में स्कूल की बिल्डिंग में आग से हड़कंप:बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाला

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

अजमेर के धोलाभाटा क्षेत्र में बुधवार सुबह 10:30 बजे प्राइवेट स्कूल किडजी के तीसरे फ्लोर में आग लग गई। आग लगने से धुआं फैलने से हड़कंप मच गया। बिल्डिंग मालिक और टीचर्स ने सभी बच्चों को स्कूल से बाहर निकाला। सूचना पर करीब 10 मिनट में फायर ब्रिगेड पहुंच गई और आग पर काबू पाया। बच्चों के परिजन भी दौड़ते हुए पहुंच गए। बच्चों को सुरक्षित देख राहत की सांस ली। तीसरे फलोर पर बिल्डिंग मालिक का घर है। आग वहां बने मंदिर शॉर्ट सर्किट होना बताया जा रहा है। हालांकि स्कूल की बिल्डिंग में आग लगने की जानकारी अलवर गेट थाना पुलिस के पास नहीं थी। शॉर्ट सर्किट से लगी थी आग असिस्टेंट फायर ऑफिसर सुरेंद्र मीणा ने बताया कि किडजी स्कूल में आग लगने की सूचना मिली थी। करीब दो गाड़ियां मौके पर भिजवाई गई थी। आग बिल्डिंग की तीसरी मंजिल पर लगी थी। आग पर काबू पा लिया गया है। शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगी। बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाल दिया गया था। अग्निशमन यंत्र और अन्य संसाधनों को लेकर जांच की जा रही है।

बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाला

बिल्डिंग मलिक डॉ रंजीता तंवर ने बताया कि बिल्डिंग की तीसरी मंजिल पर उनका घर है। शॉर्ट सर्किट होने पर आग लग गई थी। तुरंत भागते हुए नीचे पहुंची और स्कूल के सारे बच्चों को बाहर निकाल कर पास के कैंपस में भिजवा दिया था। स्टाफ को भी बाहर निकाल लिया था। सभी बच्चे सुरक्षित हैं। घर के अंदर नुकसान हुआ है। फायर ब्रिगेड ने आग पर काबू पा लिया था।

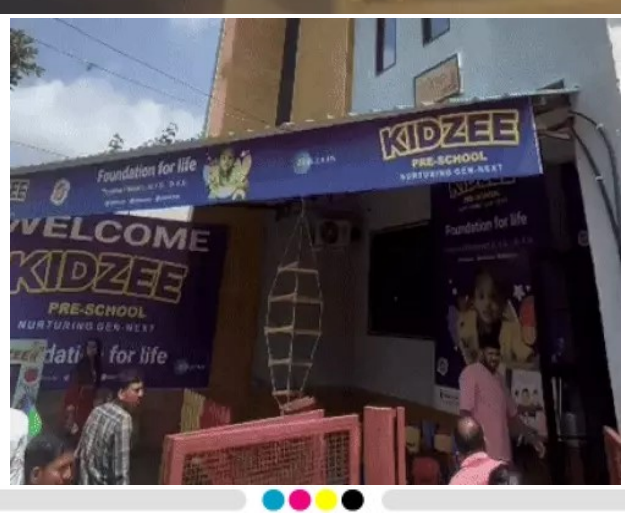

जयपुर में खेली जाएगी पहली टी-10 लीग:यूसुफ पठान, इरफान पठान

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

जयपुर में इंडियन प्रीमियर लीग के बाद अब पहली बार टी - 10 लीग की शुरुआत होने जा रही है। गुरुवार से सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित होने वाली लीग में हर्षल गिब्स, रॉस टेलर, इरफान पठान, यूसुफ पठान जैसे अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी 6 टीमों का नेतृत्व करते नजर आएंगेइन टीमों में 74 भारतीय खिलाड़ी 10 ओवर में अपनी प्रतिभा दिखाने मैदान में उतरेंगे।

जयपुर पहुंचे भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान मोहम्मद अजहरुद्दीन ने कहा कि लेजेंजी टी-10 लीग जैसे मंच के जरिए युवा खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय दिग्गजों के साथ खेलने का मौका मिलना प्रेरणादायक साबित होगा। ऐसे टूर्नामेंट सिर्फ मनोरंजन ही नहीं, बल्कि, नई पीढ़ी को बड़े सपने देखने के लिए भी प्रेरित करेंगे। मैं इस टूर्नामेंट की सभी 6 टीमों को शुभकामनाएं देता हूं और उम्मीद करता हूं कि यहां से कई भविष्य के सितारे उभरकर सामने आएंगे। लेजेंजी टी-10 लीग के संस्थापक और सीईओ चिरंजीव दुबे ने कहा कि इस लीग का उद्देश्य सपनों को हकीकत में बदलना है। युवा प्रतिभाओं को उस मंच पर लाना है। जहां वे उन क्रिकेट दिग्गजों के साथ खेल सकें, जिन्हें वे सालों से आदर्श मानते आए हैं। उन्होंने कहा कि मैं खुद जयपुर से हूं और जयपुर के इंटरनेशनल स्टेडियम में ही इस लीग का आयोजन किया जा रहा है। यह मेरे लिए भी काफी खुशी की बात है।

दुबे ने बताया कि 7 अगस्त को जयपुर के सवाई मान सिंह इंटरनेशनल स्टेडियम में टी 10 लीग की शुरुआत होगी। जहां पहला मुकाबला रॉयल चैलेंजर्स

C M Y K

सम्पादकीय

दिल्ली की कानून व्यवस्था पर बड़ा सवाल

दिल्ली की कानून व्यवस्था पर इससे बड़ा सवालिया निशान क्या होगा कि अति विशिष्ट इलाके में झपटमार एक महिला सांसद की चेन छीन कर भाग जाएं। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि आम आदमी किस कदर असुरक्षित माहौल में रहने पर मजबूर है। सुरक्षा चाक-चौबंद होने के तमाम दावों के बावजूद दिल्ली में जिस तरह से पिछले कुछ वर्षों में झपटमारी, लूटपाट और हत्या की घटनाएं बढ़ी हैं, उससे पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठे हैं। यह हाल तब है जब दिल्ली में दो-दो सरकारें हैं और पुलिस सीधे केंद्र के नियंत्रण में है।

ताज्जुब है कि अपराधियों पर नजर रखने के लिए अत्याधुनिक तकनीकी संसाधन होने पर भी अपराधों पर काबू नहीं पाया जा सका है। अगर दिल्ली पुलिस में पर्याप्त बल की अब भी कमी है, तो इसे पूरा करने की जिम्मेदारी किसकी है? गौरतलब है कि दिल्ली के चाणक्यपुरी जैसे अति विशिष्ट इलाके में सोमवार की सुबह सैर के लिए निकलीं तमिलनाडु की लोकसभा सांसद आर सुधा सरेआम झपटमारी की शिकार हो गईं। पोलैंड दूतावास के पास से गुजरते समय झपटमार उनसे सोने की चेन छीन कर भाग गया। छीना-झपटी के क्रम में उनके गले में चोट भी आई। दिल्ली के सबसे सुरक्षित माने जाने वाले इलाके में यह चौंका देने वाली घटना तो है ही, इससे पुलिस की कार्यशैली और उसके प्रभाव पर भी गंभीर सवाल उठते हैं। खासतौर पर ऐसे समय में, जब संसद सत्र चल रहा हो और इस दौरान दिल्ली के केंद्रीय हिस्से में सुरक्षा व्यवस्था सख्त मानी जाती है। मगर इस घटना के बाद यह कहा जा सकता है कि आम आपराधिक घटनाओं के समांतर दिल्ली में बहुस्तरीय सुरक्षा इंतजामों के घेरे वाले इलाके में भी अगर महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं, तो देश के बाकी हिस्सों में क्या उम्मीद की जा सकती है?

प्रधान संपादक - दयाराम दिव्य

मनोज पोसवाल बने राजस्थान शिक्षक संघ एकीकृत धौलपुर के जिला अध्यक्ष

द मूवमेंट ऑफ इंडिया
राजकुमार सैन

राजस्थान शिक्षक संघ एकीकृत के प्रदेशाध्यक्ष डा रनजीत मीणा व प्रदेश संगठन महामंत्री चंद्रभान चौधरी द्वारा धौलपुर जिले के जिलाअध्यक्ष पद पर जिले के शिक्षकों के लिए वर्षों से संघर्षरत मनोज पोसवाल अध्यापक लेवल 2 अंग्रेजी राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रजई खुर्द बाड़ी धौलपुर की नियुक्ति की है। संघठन द्वारा मनोज पोसवाल से एक सप्ताह में अपनी कार्यकारणी की घोषणा करने के लिए कहा गया है। मनोज पोसवाल की नियुक्ति पर संगठन के पदाधिकारियों द्वारा हर्ष व्यक्त किया गया है।

मनोज पोसवाल ने बताया कि प्रदेश कार्यकारणी का धौलपुर संघ के द्वारा पूरा सहयोग किया जायेगा जो भी आंदोलन प्रदेश में किए जाएंगे उसमें जिले से सभी बढ़ चढ़कर भाग लेंगे। धौलपुर में शिक्षकों की हर समस्या का निराकरण करवाने का प्रयास किया जाएगा।

मनोज पोसवाल को भारत गुर्जर, गंगाराम गुर्जर, राकेश प्रजापति, भगवान सिंह मीणा, चौलसिंह, प्रीति परमार, प्रीति गोयल, चिंकी शर्मा, पोहपसिंह, रवि खान, पृथ्वीराज सिंह, रामवरण कपासिया, रोहित गुर्जर, छत्रपाल सिंह,लक्ष्मीनारायण शर्मा, टीकम सिंह, रमाकांत शर्मा, मधु यादव, दुर्गावती, नीतू अग्रवाल, दिलीपखान शिक्षकों ने

वॉट्सएप,fb पर बधाई दी।

शाहपुरा में सहस्त्र लिंग महादेव का आकर्षक श्रृंगार, 101 किलो खीर का लगाया भोग

द मूवमेंट ऑफ इंडिया
शाहपुरा राजेन्द्र खटीक।

शाहपुरा। सावन माह में भगवान शिव की आराधना का क्रम निरंतर जारी है। इसी क्रम में शाहपुरा के कोठी रोड स्थित भाणा गणेश जी मंदिर के सामने सहस्त्र लिंग महादेव मंदिर में भक्तिभाव से पूजन-अर्चन और विशेष श्रृंगार किया गया।खास बात यह रही कि भोले बाबा का मनमोहक श्रृंगार छोटे बच्चों द्वारा किया गया, जिसने सभी श्रद्धालुओं का मन मोह लिया।

श्रृंगार कार्यक्रम में अनीता तंबोली,

परी तंबोली, ऐशना तंबोली, हिमानी तंबोली और वैभव पांडिक सहित अन्य बच्चों ने भाग लिया।बच्चों ने भगवान शिव की प्रतिमा को विविध पुष्पों, वस्त्रों और आभूषणों से भव्य रूप से सजाया।

शाम को भोलेनाथ को श्रद्धापूर्वक 101 किलो खीर का भोग अर्पित किया गया।भोग के पश्चात सभी भक्तों को खीर का प्रसाद वितरित किया गया।मंदिर परिसर में भक्ति और श्रद्धा का माहौल बना रहा।महिलाओं द्वारा भजन कीर्तन का आनंद लिया गया।

शाहपुरा बियर्ड क्लब के सदस्यों ने कोटा बियर्ड कंपीटिशन में दिखाया दम, जीते कई पुरस्कार

द मूवमेंट ऑफ इंडिया
शाहपुरा राजेन्द्र खटीक।

शाहपुरा-अतरंगी प्रोडक्शन के बैनर तले कोटा में पहली बार हुए बियर्ड कंपीटीशन में शाहपुरा बियर्ड क्लब के सदस्यों ने अलग-अलग रूप में अपना दम दिखाया और कई पुरस्कार जीत कर शाहपुरा का नाम रोशन किया।

अतरंगी प्रोडक्शन हाउस के डायरेक्टर चेतन सोनी ने बताया कि इस कार्यक्रम में प्रोडक्शन हाउस में बने नए गाने ब्लैक थार की लांचिंग की गई जिसमें शाहपुरा बियर्ड क्लब के सदस्य धीरज पारीक ने शानदार अभिनय किया और अपनी अलग छाप छोड़ी है बियर्ड कंपीटिशन के निर्णायक रहे शाहपुरा बियर्ड क्लब के संस्थापक ओर मि. बियर्ड मेन डॉ. इशाक खान ने बताया कि इस कंपीटीशन में पूरे भारतवर्ष से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था।जिसमें बियर्ड और मूंछ की 10 कैटेगरीयां रखी गई थी।इनमें शाहपुरा बियर्ड क्लब के तीन सदस्यों ने अपने शानदार प्रदर्शन से जीत हासिल कर प्रथम पुरस्कार अपने नाम किया।

इसमें कला प्रेमी और शॉर्ट फिल्म में नेशनल अवॉर्ड विजेता डुस्र1. दीपक पारीक ने ग्रे बियर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। शाहपुरा के ही प्रवीण सुखवाल ने लांगेस्ट मूंछ में प्रथम स्थान प्राप्त किया साथ ही फंकी बियर्ड कैटेगरी में शाहपुरा के हुकुमपुरा गांव के रहने वाले दिनेश कुमार भील ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शाहपुरा का नाम रोशन किया।

ब्लैक थार गाने में अभीनय करने वाले धीरज पारीक ने बताया कि अभिनय की प्रेरणा उनको अपने पिता संचिना कला संस्थान के अध्यक्ष राम प्रसाद पारीक से मिली एवं पूरे परिवार के सदस्य इस कला को भिन्न-भिन्न स्तर पर अलग

अलग रूप में आगे बढ़ा रहे हैं।

ग्रे बियर्ड विजेता दीपक पारीक ने बताया कि अपने पिता की प्रेरणा से अभी तक कई मंचों पर अलग अलग तरह से वो काम करते आए है जिसमे नाटक, संगीत, नेशनल अवॉर्ड विनिंग शॉर्ट फिल्म में अभिनय करना आदि। दाढ़ी के क्षेत्र में उनको लाने का श्रेय मि. बियर्ड मेन डॉ. इशाक खान को जाता है जिन्होंने शाहपुरा बियर्ड क्लब बनाया और अनेकों प्रतिभाओं को आगे लाने का काम कर रहे है इसी का परिणाम है कि आज शाहपुरा दाढ़ी मूंछ के क्षेत्र में भी पहचाना जाने लगा है।

शाहपुरा पहुंचने पर परिवार के सदस्यों, इष्टमित्रों और शहरवासियों ने माला पहनाकर मिठाई खिलाकर इनका स्वागत किया और बधाई दी।इस मौके पर रेहान खान, विकास कुमार, राहिल खान, मिलन कुमार, देव पाराशर आदि मौजूद थे।

भाजपा जिलाअध्यक्ष ने दिखाइए दरियादिली

द मूवमेंट ऑफ इंडिया
राजकुमार सैन

धौलपुर भाजपा के जिलाध्यक्ष राजवीर सिंह राजावत आज जब बसेड़ी से धौलपुर पार्टी के कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे थे रास्ते में विश्नोदा के पास एक सड़क दुर्घटना में घायल लोगों को देखकर तुरंत मौके पर रुके और मानवीय संवेदनाएं दिखाते हुए घायल लोगों को अपनी गाड़ी में बिठाकर धौलपुर जिला चिकित्सालय में लाकर भर्ती करवाया और डॉक्टर से संपर्क तुरंत इलाज शुरू करवा कर राहत दिलाई

नगर निगम द्वारा हर घर तिरंगा-हर घर स्वच्छता अभियान की समीक्षा बैठक आयोजित

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा । नगर निगम भीलवाड़ा द्वारा हर घर तिरंगा हर घर स्वच्छता अभियान की तैयारी के लिए समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। महापौर राकेश पाठक ने बताया कि आगामी स्वतंत्रता दिवस से पूर्व शहर में हर घर तिरंगा हर घर स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत प्रथम चरण में 2 अगस्त से 7 अगस्त तक शहर के विद्यालयों की दीवारों और बोर्ड को तिरंगा थीम के अनुसार सजावट करना, सरकारी भवनों एवं शैक्षणिक संस्थानों में प्रदर्शनियों का आयोजन करना, तिरंगा राखी बनाने की कार्यशालाएं एवं प्रतियोगिताएं आयोजित करना, स्कूल कॉलेज और सार्वजनिक स्थानों पर तिरंगा रंगोली प्रतियोगिता आयोजित करने के कार्यक्रम, मेरा शहर स्वच्छ शहर, मेरा कचरा मेरी जिम्मेदारी विषय पर जागरूकता अभियान सहित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे । अभियान के द्वितीय चरण में 9 अगस्त से 12 अगस्त तक स्वयं सहायता समूह की सहभागिता से तिरंगा मेला और तिरंगा संगीत कार्यक्रम का आयोजन शहर के मुख्य स्थान पर किया जाएगा। अभियान के तृतीय चरण में 13 अगस्त से 15 अगस्त तक सर्वश्रेष्ठ रंगोली चित्रकार, स्वच्छ जल निकाय, स्वच्छ कार्यालय, स्वच्छ बाजार, स्वच्छ पर्यटन स्थल, स्वच्छ विद्यालय हेतु सर्वश्रेष्ठ आने वालों को पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इसी के साथ प्रत्येक वार्ड के एक सर्वश्रेष्ठ स्वच्छता वाले मकान मालिक को निगम द्वारा पुरस्कार प्रदान किया जाएगा एवं शहर के 15 कचरा स्टैंड पर दिन में कचरा नहीं डाला जाए इस हेतु कार्मिकों की नियुक्ति की जाएगी।

डीएमके को बिहारी मतदाताओं से परेशानी

तमिलनाडु में बिहार के मजदूरों के उत्पीड़न और हिंदी विरोध की खबरें आती रहती हैं। लेकिन अब एक नई समस्या खड़ी हो गई है। राज्य में सत्तारूढ़ डीएमके और उसकी सहयोगी वीसीके जैसी प्रादेशिक पार्टियां इस बात से परेशान हैं कि तमिलनाडु के अलग अलग हिस्सों में बड़ी संख्या में बिहारी या उत्तर भारत के दूसरे राज्यों के मजदूर मतदाता बन रहे हैं। उनका नाम मतदाता सूची में शामिल किया जा रहा है। एक अनुमान के मुताबिक तमिलनाडु में करीब साढ़े छह लाख बिहारी मतदाता शामिल हो गए हैं। अभी मतदाता सूची में नए नाम शामिल करने की प्रक्रिया जारी है। असल में चुनाव आयोग ने बिहार में बड़ी संख्या में ऐसे मतदाताओं के नाम काटे हैं, जो स्थायी रूप से दूसरी जगह चले गए हैं। ऐसे लोगों को आयोग उन जगहों का मतदाता बना रहा है, जहां वे रहते हैं। तभी कहा जा रहा है कि तमिलनाडु के अलग अलग शहरों और महानगरों में प्रवासी मतदाताओं की संख्या बढ़ सकती है। इससे डीएमके और अन्य पार्टियों को लग रहा है कि पूरी डेमोग्राफिक संरचना बदल सकती है। इसके साथ ही राज्य का पूरा राजनीतिक परिदृश्य भी बदल सकता है। अगर प्रवासी मतदाताओं की संख्या 10 लाख तक हो जाती है तो वे अनेक विधानसभा सीटों पर नतीजों को प्रभावित करने की स्थिति में होंगे। डीएमके और उसकी सहयोगी पार्टियों को लग रहा है कि यह मतदाता समूह भाजपा के लिए वोट करेगा, जिसका नतीजों पर बड़ा असर हो सकता है। आने वाले दिनों में इस पर विवाद बढ़ने की संभावना है।

ईसाई मतदाताओं की चिंता में भाजपा

केरल में अगले साल अप्रैल-मई में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं और भाजपा को लग रहा है कि इस बार उसका प्रदर्शन ऐतिहासिक हो सकता है। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन अच्छा हुआ था। पार्टी का खाता भी खुला था और दो सीटों पर उसने कांटे की लड़ाई बना दी थी। अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद में भाजपा राज्य के ईसाई मतदाताओं को पटाने में लगी है। लेकिन इस बीच मामला बिगड़ गया छत्तीसगढ़ में, जहां दो ईसाई महिलाओं को धर्मांतरण कराने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। दोनों नन के साथ तीन आदिवासी महिलाएं किसी कार्यक्रम में जा रही थीं उसी समय उनको गिरफ्तार कर लिया गया। इस घटना को लेकर बड़ा विवाद हुआ। कांग्रेस और विपक्षी पार्टियों ने इसे मुद्दा बनाया तो भाजपा की ओर से ऐसे मीम्स और कार्टून बने, जिनमें सोनिया व राहुल गांधी को चर्च के आगे नतमस्तक दिखाया गया। लेकिन जल्दी ही केरल भाजपा ने मुद्दा अपने हाथ में ले लिया क्योंकि दोनों नन केरल की रहने वाली थीं। केरल के प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने न्यायिक प्रक्रिया में लगभग दखल देते हुए पहले ही ऐलान कर दिया कि जल्दी ही दोनों ईसाई महिलाओं को जमानत मिलेगी। फिर कांग्रेस पर हमला बंद कर दिया गया और दुष्प्रचार भी थम गया। फिर दोनों महिलाओं को शनिवार को जमानत भी मिल गए। सोचें, धर्मांतरण के मामले में एक हफ्ते में दोनों महिलाओं को जमानत मिली और सबसे दिलचस्प तस्वीर यह थी कि केरल के प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर खुद छत्तीसगढ़ पहुंचे थे दोनों महिलाओं का स्वागत करने। जेल से बाहर आने पर चंद्रशेखर ने उनका स्वागत किया और यह संदेश बनवाया कि भाजपा ने उनकी जमानत कराई है।

कंबोडिया, थाईलैंड जहा विरासत के मंदिर के लिए लड़ते है!

कंबोडिया का अंगकोर वाट मंदिर आपको चकाचौंध नहीं करता है बल्कि वो धीरे-धीरे आपको अपने भीतर खींच लेता है। वह आपको एक ऐसे समय में ले जाता है जहाँ भव्यता सांस थी और आस्था, श्रद्धा स्वाभाविक। जब शहर ईश्वर के लिए गढ़े जाते थे, न कि मुनाफ़े, अंहकार या दिखावे के लिए। जब वास्तुकला अहंकार नहीं, ईश्वर को एक अर्पण हुआ करता था। जब शांति युद्धों के बीच का विराम नहीं होता था बल्कि उस दुनिया की सहज एक धड़कन थी जो अभी भी भव्यता का बोध कराती, संवाद करती होती है। मैं अंगकोर वाट मंदिर गई हूं। उसकी उसका विस्तार देख कर स्तब्ध हुई थी। वो वाला स्तब्ध होना एक अलग ही तरह का था, जो धीरे-धीरे भीतर उतरता है। स्केल चौंकाता ज़रूर है, हाँ—लेकिन जो भीतर ठहर जाता है, वो है उसकी पवित्रता (स्केल चौंकाता है, हाँ—but what lingers is the sanctity) हर गलियारा मानो एक भूली हुई सच्चाई फुसफुसाता है: कभी वह सुंदरता, दिव्यता, आस्था का पुंज था, भाषा थी। मंदिर तब बना था जब खमेर साम्राज्य अपने शिखर पर था—9वीं से 15वीं शताब्दी के बीच। तब वहा लाखों लोग बसे थे और मंदिरों का निर्माण ऐसा हुआ जो आज की अरबों डॉलर की अर्थव्यवस्थाएँ भी सपना नहीं देख सकतीं। इसका हृदय था अंगकोर वाट—एक मंदिर जो मूलत: विष्णु को समर्पित था, हिंदू ब्रह्मांड की संरचना पर आधारित, खाइयों, मीनारों और पौराणिक चित्रकथाओं से सुसज्जित। इतना विस्तृत, इतना बारीक कि 19वीं सदी में जब फ़्रांसीसी प्रकृतिविद हेनरी मुहो ने इस मंदिर परिसर को "पुनः खोजा," तो उन्होंने लिखा—"यह यूनान और रोम द्वारा छोड़ी गई किसी भी वास्तु से अधिक भव्य है।" लेकिन हर महान सभ्यता की तरह, कंबोडिया की सभ्यता भी बाद में टूटी। युद्धों में, जंगलों में, विस्मृति में। मगर मंदिर बचे रहे। कला ने न सिर्फ़ समय के झंझावत झेले, बल्कि उस साम्राज्य को भी पीछे छोड़ दिया जिसने उसे जन्म दिया था। अंगकोर टिका रहा—क्योंकि उसे टिकने के लिए ही रचा गया था। और उसके बाद जो हुआ, वो दुर्लभ है—सिर्फ पुनर्निर्माण नहीं, राष्ट्रीय गौरव, आस्था व श्रद्धा। कंबोडिया ने, नरसंहार और त्रासदी के बावजूद, इस मंदिर की स्मृति को मिटाया नहीं, बल्कि उसे सचमुच पुनर्जीवित किया। आज अंगकोर अकेला नहीं खड़ा, वह नियत और नीति से खड़ा है। प्रवेश के लिए पास, टिकट अनिवार्य है, आवागमन इलेक्ट्रिक रिक्शा से होता है, और इंस्टाग्रामmers के बीच भी यहां एक अजीब सी नीरवता बनी रहती है। यह मंदिर जैसा ही लगता है—थीम पार्क नहीं। और पूरी दुनिया से लोग उसे देखने जाते है। लेकिन फिर, 2024 में, कंबोडिया ने सिर्फ़ अपनी धरोहर को संरक्षित नहीं किया। इस सप्ताह थाईलैंड और कंबोडिया के बीच पाँच दिन का जो सशस्त्र संघर्ष छिड़ा है वह प्रेह विहेर को लेकर है। और यह भी एक और प्राचीन मंदिर है, एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित। दो देशों की ताजा भिडंत में 40 लोग मारे गए है, हज़ारों विस्थापित है। गोलाबारी तब थमी जब कथित तौर पर डोनाल्ड ट्रंप ने व्यापार समझौते रद्द करने की धमकी दी। दुनिया के लिए, सबके लिए चौकने वाली बात यह है कि 21वीं सदी में भी 12वीं सदी के मंदिर के लिए युद्ध! इसलिए क्योंकि इन दोनों देशों में विरासत, परंपरा अब भी अर्थ रखती है। कंबोडिया के लिए खमेर साम्राज्य द्वारा बनाए गए मंदिर उसकी आत्मा हैं—युद्धों के बचे, पहचान के साक्ष्य। थाईलैंड भी इन्हें अपना मानता है—पूर्व-औपनिवेशिक मानचित्रों का हवाला देकर। इन मंदिरों पर विवाद 2008 से चला आ रहा है, जब थाई प्रदर्शनकारियों ने प्रेह विहेर पर चढ़ाई की थी। राजनीति चाहे जितनी उलझी हो, भावना स्पष्ट है: वो अपने खंडहरों के लिए भी लड़ने को तैयार हैं। हमने भी युद्ध लड़े हैं—हाल ही में, बार-बार। लेकिन सीमाओं के लिए, न कि विरासत के लिए। आतंकवाद पर लड़े, भूमि के लिए लड़े, मगर मंदिरों के लिए, संस्कृति-सभ्यता की धरोहर के लिए कभी नहीं। जबकि हमारा अतीत 1947 से कहीं गहरा है। हम एक ही सभ्यता से जन्मे थे—सिंधु घाटी से। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा पाकिस्तान में, धोलावीरा और राखीगढ़ी भारत में। ऐसे नगर जो रोम और एथेंस से भी पहले के हैं—जहाँ की नालियाँ, भंडारगृह, और शहरी नियोजन आज की सरकारें भी पढ़ सकती हैं। लेकिन ये स्थल युद्ध में नहीं, बल्कि चुप्पी में धीरे-धीरे खो रहे हैं। मोहनजोदड़ो, यूनेस्को टैग के बावजूद, धीरे-धीरे ढह रहा है। पाकिस्तानी पुरातत्वविद आए दिन चेतावनी देते हैं—लेकिन उन्हे पैसा, फंड्स नहीं मिलते। भारत में राखीगढ़ी मे सिर्फ़ चुनाव के समय थोड़ी धूल झड़ती है। खुदाई अधूरी, संग्रहालय योजना अधर में, और भारत के लोग अनजान। धोलावीरा को कभी-कभार यूनेस्को से ज़िक्र मिलता है, पर देखभाल नहीं। यहाँ एक सभ्यता है—वेदों से भी प्राचीन, विभाजन से भी गहरी लेकिन कोई इसके लिए आवाज़ नहीं उठाता। कभी नहीं उठाई। भारत और पाकिस्तान ने चार युद्ध लड़े, पर कभी हड़प्पा या मोहजोदड़ो की रक्षा के लिए, सांस्कृतिक विरासत के केंद्रों, स्मृतियों के लिए नहीं। हमें 1947 जरूर याद है लेकिन भारत और पाकिस्तान दोनों अपने मूल जन्मकाल के 3000 ईसा पूर्व भूल चुके हैं। ठिक दूसरी तरफ कम से कम कंबोडिया और थाईलैंड को तो भारतीय संस्कृति से प्राप्त विरासत, उन स्मृतियों की याद है! और वे उसके लिए लड़ रहे हैं। जबकि हम, भारत के 140 करोड़ लोगों को तो यह भी ध्यान नहीं है कि हमने क्या खो दिया है। लेकिन हम भारतीयों ने एक कला गढ़ ली है, दिमाग में इतना भर पैठाया है या तो इसे सड़ने दो, या नाम बदल दो, रंग पोत दो, दोबारा इस्तेमाल कर लो। और दुनिया की सर्वाधिक प्राचीनतम सभ्यता की प्राचीन पांडुलिपियाँ बंद अलमारियों में दीमक के हवाले हैं। भारत में मंदिर अब राजनीतिक फ़ोटू खिंचवाने की पृष्ठभूमि बन गए हैं। संग्रहालय वो गेस्ट हाउस बन चुके हैं जहाँ न क्यूरेटर है, न रोशनी—सिर्फ़ तब जगमगाते हैं जब कोई मंत्री फोटो-ऑप के लिए आता है। देखिए सरस्वती नदी परियोजना को—हजारों साल बाद, एक नदी को डिजिटल रूप में फिर से 'जिंदा' करने की कोशिश। पर उसके किनारे के पुरातात्विक स्थल चुपचाप मिटते जा रहे हैं। तारखानवाला डेरा, जो कभी प्रमुख हड़प्पा स्थल था, अब अवैध ईंट भट्टों के नीचे है। बरोर अनियंत्रित निर्माण की भेंट चढ़ गया। 60 प्रतिशत से ज़्यादा स्थल पहले ही गायब हो चुके हैं—कभी स्थानीय अनभिज्ञता से, तो कभी सरकारी उदासीनता से। यह संरक्षण नहीं, प्रदर्शन है। और फिर है दिल्ली। लुटियन्स दिल्ली एक जटिल, परतदार प्रयोग थी— औपनिवेशिक जड़ों वाली ज़रूर, पर भारतीय सभ्यता के संकेतों से गूंथी हुई। मुगलों से लाल बलुआ पत्थर, यूनान से भव्य धुरी। हिंदू, जैन, बौद्ध शिल्प परंपराओं से अलंकरण। उसका दिल था—सेंट्रल विस्टा। एक लोकतांत्रिक गणराज्य की गति का दृश्य रूपक। आज वह दृष्टि धीरे-धीरे, सोच-समझकर ध्वस्त की जा रही है। बिमल पटेल—मोदी के "नए भारत" के वास्तुकार—पहले साबरमती को सीमेंट कर चुके हैं। अब दिल्ली की आत्मा समतल की जा रही है। राजपथ से नालंदा तक, वाराणसी से जयपुर तक— पुराने को दोबारा कल्पना नहीं दी जा रही बल्कि उसे मिटाया जा रहा है। बिना कल्पनाशीलता के। दिल्ली और हमारे ज़्यादातर शहर संकट में हैं—राजनीतिक, पर्यावरणीय, सांस्कृतिक। और इस संकट को एक अवसर की तरह देख कर राजधानी को समावेशी और कल्पनाशील रूप देने की बजाय, हमने चुना है—मिटा देना। वास्तुकला, अपने सर्वोत्तम रूप में, हमारी आत्मा का प्रतिबिंब होती है। सिर्फ़ इमारतें नहीं, बल्कि स्मृति और पहचान की संरचनाएँ। आज की पुनर्रचना सिर्फ़ एक शहर नहीं बदल रही— वो एक गहरा सच उजागर कर रहा है: हम क्या बना रहे हैं, यह कम महत्वपूर्ण है। हम क्या दफ़ना रहे हैं, यही असली सवाल है। इसलिए अब प्रश्न यह नहीं कि विरासत किसकी है— बल्कि यह है, क्या जब वह पूरी तरह खो जाएगी, तो हम उसे क्या पहचान भी पाएँगे? या हम तब तक इंतज़ार करेंगे—जैसा हम करते आए हैं— जब तक संग्रहालय की आख़िरी तस्वीर धुँधली न हो जाए, आख़िरी मूर्ति काँच के पीछे टूट न जाए, और अगली पीढ़ी का कोई बच्चा एक पट्टिका पढ़े जिस पर फीकी स्याही में लिखा हो— "यह कभी हम थे।" कंबोडिया और थाईलैंड भले ही खंडहरों के लिए युद्ध कर रहे हों—पर कम से कम उन्हें याद है कि वो किसके लिए लड़ रहे हैं। उनकी संस्कृति, सभ्यता की भव्यता, मौलिकता क्या थी? मूल क्या था? हम या तो अपनी धरोहर को दोबारा पेंट कर रहे हैं, या उसे वक़्त के हवाले चुपचाप सड़ने दे रहे हैं।

-श्रुति व्यास

अब तक सिर्फ चार उप राष्ट्रपति निर्विरोध जीते हैं!

भारत में उप राष्ट्रपति निर्विरोध चुने जाने की परंपरा नहीं रही है। भारत के गणतंत्र घोषित होने के बाद यानी 1950 के बाद पिछले 75 साल में सिर्फ चार ही उप राष्ट्रपति निर्विरोध चुने गए। इसके अलावा हर बार विपक्षी पार्टियों ने उम्मीदवार उतारे। इन चार में से दो बार तो डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ही निर्विरोध चुने गए। वे देश के पहले उप राष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति हैं। वे दोनों बार निर्विरोध चुने गए। उनके अलावा एक बार एमएन हिदायतुल्ला निर्विरोध हुए और एक बार शंकर दयाल शर्मा निर्विरोध उप राष्ट्रपति चुने गए। 1987 में जिस समय शंकर दयाल शर्मा चुने गए उस समय कांग्रेस पार्टी के पास 415 सांसदों का बहुमत था। तभी विपक्षी पार्टियों ने उम्मीदवार नहीं उतारा। हालांकि 21 अन्य लोगों ने नामांकन दाखिल किया था, जो जांच में गलत पाए गए और रद्द कर दिए गए। ध्यान रहे शंकर दयाल शर्मा 1987 में उप राष्ट्रपति बने और उसके दो साल बाद 1989 से ही भारत में गठबंधन की राजनीति का दौर शुरू हुआ। भाजपा और वामपंथी पार्टियों के बाहरी समर्थन से जनता दल के वीपी सिंह प्रधानमंत्री बने। उसके बाद से ही उप राष्ट्रपति का चुनाव कभी भी निर्विरोध नहीं हुआ। हर बार विपक्ष ने उम्मीदवार उतारा। यह अलग बात है कि विपक्ष का उम्मीदवार कभी जीत नहीं सका। सबसे नजदीकी मुकाबला 2002 में हुए, जब सत्तापक्ष यानी एनडीए के भैरोसिंह शेखावत के मुकाबले कांग्रेस ने सुशील कुमार शिंदे को उम्मीदवार बनाया था। शिंदे को 40 फीसदी से कुछ ज्यादा वोट मिले थे। इसके बाद किसी भी चुनाव में विपक्ष को उप राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार को 35 फीसदी से ज्यादा वोट नहीं मिले। कांग्रेस के शासन में दो चुनाव हुए और दोनों बार हामिद अंसारी उम्मीदवार थे। उनके सामने एनडीए ने पहले नजमा हेपतुल्ला को और फिर जसवंत सिंह को उतारा। नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद विपक्ष ने पहले गोपालकृष्ण गांधी और फिर मारग्रेट अल्वा को उम्मीदवार बनाया। 2022 के चुनाव में कर्नाटक की मारग्रेट अल्वा उम्मीदवार थीं और 2023 में वहां कांग्रेस ने बड़ी जीत दर्ज की।

कश्मीर को लेकर क्या सोच बदली!

"कश्मीर की फिर से कल्पना नहीं की जा सकती है, इसलिए क्योंकि वह बदलता नही वह तो हिंसा और आतंक की ज़मीन है।" यह वाक्य मैंने दिल्ली के एक 'बौद्धिक' की जुबान से से सुना है, वो जिसने खुद कश्मीर को सिर्फ दूर से देखा है, और उसे हमेशा आंदोलन, संघर्ष में ही फंसा समझा है। उसके लिए कश्मीर एक सूबा, भूमि नहीं बल्कि एक रूपक है। जहाँ खूबसूरती और कांटेदार तारें इतनी गुथमगुथा है कि कविता बन जाए। जहाँ हर धमाका एक नया कॉलम, एक नई बहस जन्म देता है। तभी कश्मीर को फिर से, नए अंदाज में सोचना, उसकी कल्पना करना उसके लिए और उन जैसे कई बुद्धीजीवियों के लिए अपने नैरेटिव को खो बैठना है। अगर कश्मीर में संघर्ष और खून-खराबा बंद हुआ मान ले, आम जीवन में अमन-चैन आया माने तो तब लुटियन दिल्ली के ड्रॉइंग रूम में बातें किस पर होंगी? छह साल हो गए उस बड़े, विवादित और निर्णायक फ़ैसले को—जब अनुच्छेद 370 और 35A को खत्म किया गया। लेकिन क्या तब से कश्मीर को देखने का हमारा नज़रिया बदला है? क्या हम उस थके हुए मुहावरे—संघर्ष क्षेत्र, खोया स्वर्ग—से आगे निकल पाए हैं? क्या हम वादी को अब प्रतीक नहीं, एक असल जगह की तरह देखने लगे हैं? क्योंकि अब यह कहानी सिर्फ एक राज्य की नहीं रही। अब बात ज़मीन की नहीं, बल्कि नज़रिए की है। हम कश्मीर को कैसे देखते हैं—या नहीं देखते हैं—यह असली सवाल है। यह सोच की लड़ाई है। कई दशकों से कश्मीर भारत की सामूहिक कल्पना में एक अमूर्त विचार रहा है—एक घाव जिसे रोया जाए, एक ट्रॉफी जिसे दिखाया जाए, एक मंच जहाँ गुस्सा खेला जाए। न्यूज़रूम से लेकर थिंक टैंक और टॉक शो तक, कश्मीर को अक्सर 'अभिनय' की तरह पेश किया गया, समझने की कोशिश कम हुई। हिंसा, अशांति, अराजकता ठीक लगती है—वह प्राइमटाइम और ट्विटर के एल्गोरिद्म को खिलाती है। जबकि शांति, सबकुछ सामान्य होने की बात असहज कर देती है— कश्मीर घाटी राय नहीं, सहानुभूति माँगती है। इसीलिए वादी को अक्सर दो रंगों में ही समेटा गया है: खून या मातम, पीड़ित या गुनहगार। कश्मीर की कई कहानियाँ हैं—हर एक को अलग-अलग ढंग से सुनाया गया, सजाया गया, दोहराया गया, पर शायद ही कभी नया जोड़ा गया। हकीकत है कि हम सब कश्मीर पर बोलते हैं, पर कश्मीर से शायद ही कभी। इतिहास हमें बताता है—कानून एक रात में बदल सकते हैं, लेकिन मानसिकता बदलने में समय लगता है। दक्षिण अफ्रीका में जब रंगभेद खत्म हुआ, सामाजिक दीवारें फिर भी बरकरार रहीं। बर्लिन की दीवार गिरी, लेकिन 'वेस्सी' और 'ओस्सी' के बीच की मनोवैज्ञानिक दूरी वर्षों तक बनी रही। भारत की चुनौती भी कुछ अलग नहीं। कागज़ पर कश्मीर अब एक केंद्र शासित प्रदेश है। लेकिन हमारी कल्पना में, आज भी वो ज्यों का त्यों है। फिल्में भी इस सोच को तोड़ नहीं सकीं। 'द कश्मीर फाइल्स' और 'आर्टिकल 370' जैसी फिल्में वादी को एक मंच बना देती हैं—शोक, क्रोध और प्रतिशोध का। सिनेमा कम, आत्ममंथन ज़्यादा। पर इनमें वो सब ग़ायब है, जो किसी जगह को जीने लायक बनाता है। हम शायद ही कभी देखते हैं कि कश्मीरी लोग कैसे रोज जीते हैं, कैसे सांस लेते हैं। मैं आज भी एक ऐसी कहानी ढूंढ रही हूँ जहाँ कश्मीर शोक में नहीं, बल्कि आशा में हो। जहाँ मोहब्बत पोलो मार्केट की परछाई में फूले, जहाँ शायरी डल के किनारे कॉफी के साथ बहे। हम कश्मीर को एक समाज नहीं, एक तमाशा मानना ज़्यादा सहज पाते हैं। राजनीति भी उसी पुरानी स्क्रिप्ट से चिपकी हुई है। जो लोग दशकों से कश्मीर के दर्द पर अपने करियर बनाते रहे, उनके लिए यह बदलाव पचाना आसान नहीं। दिल्ली की तुष्टीकरण नीति ने श्रीनगर की शिकायतों की अर्थव्यवस्था को लंबे समय तक पोषित किया। पीड़ित होना एक आदत हो गई। जबकि अनुच्छेद 370 का अंत सिर्फ स्वायत्तता नहीं बल्कि एक पूरे 'प्रणालीगत महत्वहीनता' के ढांचे को हिला गया है। पार्टियाँ उस दर्द को अब चुनावी नारों में बदलने लगीं। दिल्ली के अभिजात्य वर्ग ने भी 'विशेष दर्जा खत्म होने' पर आंसू बहाए, बिना यह पूछे कि वह दर्जा आख़िर लेकर क्या आया? कश्मीर की त्रासदी महज़ राजनीतिक विफलता नहीं थी—यह एक गलत समझ थी। एक ऐसा इलाक़ा जो दबिस से शासित रहा, लेकिन उससे भी खतरनाक रूप से गलत समझा गया—भावनात्मक, बौद्धिक और नैतिक रूप से। और फिर भी, छह

साल बाद, एक शांत सच उभरने लगा है। प्रदर्शन में नहीं, ठहराव में। ग़ुस्से में नहीं, आत्मचिंतन में। पहले वादी हड़तालों और कर्फ़्यू की धुन पर चलती थी। स्कूलों के बंद रहने के दिन ज़्यादा होते थे। पूरा मोहल्ला 'कनेक्शन' की फुसफुसाहट के नीचे जीता था। डर कोई पल नहीं, एक माहौल था। 2017 में एक मौजूदा विधायक ने एक परिवार का मज़ाक उड़ाया, जिसके सदस्य J&K पुलिस में भर्ती हुए थे—"हिंदुस्तान ने आपके बाप को इस्तेमाल किया"—ये दिखाने के लिए कि कैसे पुनः एकीकरण को भी उपहास का विषय बनाया जा सकता है। आज उस हवा में फर्क है। विकास दिखता है। स्टार्टअप्स फल-फूल रहे हैं। पुराना दोबारा बनाया जा रहा है; नया बिंदास आधुनिक है। जो पत्थरबाज़ कभी विद्रोही माने जाते थे, वही अब उपराज्यपाल मनोज सिन्हा की सराहना करते हैं। लड़कियाँ अब गोल्फ़ खेलना सीख रही हैं, कैफ़े ग़ैर-राजनीतिक बातचीतों से गुलज़ार हैं। हाँ, डर पूरी तरह नहीं गया है—पर अब वो मौसम नहीं तय करता। क्या यह शांति है? शायद नहीं। पर यह वो अशांति, अराजकता भी नहीं, जिसकी भविष्यवाणी की गई थी। दो महीने पहले, पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष असीम मुनिर ने फिर एक रटा-रटाया भाषण दिया। वही पुराने नारे, वही ऊंची आवाज़ें—"हमारा धर्म, हमारी रिवायतें, हमारे मक़सद अलग हैं हम दो कौमें हैं।" शोर ज़रूर था, पर ऊर्जा नहीं। एक स्क्रिप्ट जो दशकों से नहीं बदली क्योंकि रावलपिंडी बदलना नहीं चाहता। पाकिस्तान के लिए कश्मीर लोग नहीं, एक बहाना है—अपनी अंदरूनी सड़न से ध्यान हटाने का ज़रिया। और उसके कुछ ही दिनों बाद, कश्मीर का मूड फिर गहराने लगा। डर और दुःख की परछाई हवा में घुल गई। भारत और पाकिस्तान कश्मीर को लेकर फिर एक मनोवैज्ञानिक टकराव में उलझ गए और एक झटके में, कश्मीर फिर 'संभावना' से 'संकट' में बदल गया। सुर्खियों से विकास गायब, डर लौट आया। और वो पुरानी, बेरहम फुसफुसाहट फिर लौट आई—कश्मीर बदल नहीं सकता। कश्मीर को लहूलुहान रहना होगा। यहीं सोच कर दरवाज़े फिर बंद हो जाते हैं। जो धीमी सी उम्मीद उगने लगी थी, उसे डर फिर कुचल देता है। लेकिन इस बार, वह पूरी तरह मिट नहीं गई। हर तरफ से उकसावे के बावजूद, कश्मीर ने खुद को हताशा में नहीं डुबोया। कुछ शांत, स्थायी आकार ले रहा है। विरोध में नहीं, ठहराव में। ग़ुस्से में नहीं, सवालों में। युवा कश्मीरी अब सवाल करने लगे हैं—हम किन नेताओं की विरासतों को आज भी मनाते हैं जिन्होंने हमें भ्रम में डाला? हम लड़ किसके लिए रहे थे—और हमारे लिए कौन लड़ रहा था? इस तरह सोचना भी बदलाव को झलकाता है एकजुटता के पलों में। जब पहलगाम में आतंकवाद ने हमला किया, कश्मीर ने बाकी देश के साथ शोक मनाया—विरोध नहीं, साझे दुःख में। शायद यही है असली बदलाव। ना कानूनों में, ना नारों में—बल्कि दुःख के साझेपन में। पर देश के ज़्यादातर हिस्सों में यह बदलाव अब भी पंजीकृत नहीं हुआ है। कश्मीर अब भी एक तारांकन चिन्ह के साथ आता है। उसे अब भी या तो ग़ुस्से में या मातम में देखा जाता है—सिर्फ जीते हुए नहीं। और स्पष्ट कर दें—यह अनुच्छेद 370 का शोकगीत नहीं है, और ना ही अंध राष्ट्रवाद का भजन। यह एक नज़रिए की पुनरावृत्ति है। असली एकीकरण झंडों या टूरिज़्म वीडियोज़ से नहीं आएगा। वह तब आएगा जब किसी कश्मीरी की महत्वाकांक्षा को 'सामान्य' माना जाएगा, 'असाधारण' नहीं। जब दिल्ली स्थिरता को एक प्रदर्शन नहीं, एक स्थिति मानेगी। जब कश्मीर अपनी आवाज़ उन्हीं लोगों को नहीं देगा जो उसकी पीड़ा से फलते-फूलते हैं। जब कश्मीर के बदलाव की कहानियाँ चमत्कार नहीं, क्षण बनकर बताई जाएंगी। और जब भारत, कश्मीर के लिए बोलना बंद करके, उसे सुनना शुरू करेगा। क्योंकि जब तक हम खुद कश्मीर को ले कर फिर से कल्पना नहीं करते, दुनिया भी नहीं करेगी। छह साल में क़ानून ज़रूर बदला है। लेकिन मानसिकता? वो अब भी अंतिम मोर्चा है। और जब तक हम कश्मीर को सिर्फ उसके सबसे बुरे दिन से देखेंगे तब तक हम कभी उसकी सबसे अच्छी सुबह की कल्पना भी नहीं कर पाएंगे।

-श्रुति व्यास

अब वनडे में विराट कोहली और रोहित शर्मा का क्या होगा इंग्लैंड में तबाही करने वाले ये बल्लेबाज जगह लेने को तैयार

एजेंसी बेंगलुरु

भारत का बेहद कड़े मुकाबले वाली एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी में इंग्लैंड को 2-2 से बराबरी पर रोकना टीम में शामिल नए क्रिकेटरों के आत्मविश्वास और देश तथा टीम के लिए अपना सब कुछ झोंकने की निडरता का जश्न था। मोहम्मद सिराज ने लगभग 200 ओवर गेंदबाजी की और अपने थके हुए शरीर को पांच टेस्ट मैच के दौरान अच्छी तरह संभाला। वाशिंगटन सुंदर कभी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हटे। यशस्वी जायसवाल ने जरूरत पड़ने पर योगदान दिया, आकाश दीप और प्रसिद्ध कृष्णा प्रभावी नजर आए और साई सुदर्शन ने अपनी दीर्घकालिक उपयोगिता की झलक दिखाई। लेकिन इस शानदार प्रयास का एक और आयाम भी है। इससे सवाल उठता है कि टी20 और टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने वाले विराट कोहली और रोहित शर्मा तथा चोटों से जूझने वाले जसप्रीत बुमराह जैसे सीनियर खिलाड़ियों का क्या होगा। कोहली 36 और रोहित 38 साल के हैं और ये दोनों संभवतः ऑस्ट्रेलिया में तीन मैच की एकदिवसीय श्रृंखला और उसके बाद दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू मैदान पर तीन मैच की एकदिवसीय श्रृंखला में खेलेंगे। इसके बाद इन दोनों को जनवरी-जुलाई 2026 के बीच न्यूजीलैंड (स्वदेश) और इंग्लैंड (विदेश में) के खिलाफ छह एकदिवसीय मैचों में खेलने का मौका मिलेगा। लेकिन क्या ये मुकाबले 2027 में दक्षिण अफ्रीका में होने वाले 50 ओवरों के विश्व कप की उनकी तैयारी के लिए हैं? क्या यह दिग्गज जोड़ी सिर्फ एक प्रारूप और आईपीएल के दम पर इतने लंबे समय तक खेलना चाहेगी? एक सूत्र ने बताया, 'हां, इस पर जल्द ही चर्चा होगी। अगले विश्व कप (नवंबर 2027) के लिए हमारे पास अभी भी दो साल से अधिक का समय है। कोहली और रोहित दोनों तब तक 40 के करीब हो जाएंगे इसलिए इस बड़ी प्रतियोगिता के लिए एक स्पष्ट योजना होनी चाहिए क्योंकि हमने पिछला खिताब 2011 में जीता था। हमें समय रहते कुछ युवाओं को भी आजमाने की जरूरत है।' 'पति के सामने प्रेमी के साथ बनाया संबंध', गिरफ्तारी पर हंसी, पति का मर्डर कर लाश के साथ सोती रही महिला कोहली और रोहित ने 2024 में विश्व कप जीत के साथ टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा लेकिन इन दोनों का टेस्ट संन्यास काफी शांत रहा। क्या इन दोनों पूर्व कप्तानों को अपने संन्यास का समय और स्थान चुनने की अनुमति होगी या उन्हें भविष्य को ध्यान में रखते हुए धीरे-धीरे बाहर किया जाएगा? सूत्र ने कहा, 'कोहली और रोहित दोनों ने टीम और खेल के लिए सफेद गेंद के क्रिकेट में बहुत बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने लगभग सब कुछ हासिल किया है।' उन्होंने कहा, 'इसलिए मुझे नहीं लगता कि कोई उन पर दबाव डालने वाला है लेकिन अगला एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय चक्र शुरू होने से पहले कुछ ईमानदार और पेशेवर बातचीत होगी जिससे यह देखा जा सके कि वे मानसिक और शारीरिक रूप से कहां खड़े हैं। यह उसी पर निर्भर करता है।' एक अन्य मुद्दा कोहली और रोहित के लिए मैच के समय की कमी है क्योंकि ये दोनों इस साल मार्च में चैंपियंस ट्रॉफी के बाद से किसी भी अंतरराष्ट्रीय मैच में नहीं खेले हैं और नवंबर में सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी टी20 और उसके बाद दिसंबर में विजय हजारे ट्रॉफी से पहले सीमित ओवरों के क्रिकेट की कोई घरेलू प्रतियोगिता भी नहीं है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के मौजूदा नियमों के अनुसार कोई भी खिलाड़ी पूरी तरह से फिट होने पर घरेलू मैच नहीं छोड़ सकता है और घरेलू मुकाबले में नहीं खेलने पर उसे राष्ट्रीय टीम से बाहर किया जा सकता है। हालांकि कोहली और रोहित को उनके कद को देखते हुए घरेलू प्रतियोगिताओं में खेलने से छूट मिल सकती है। लेकिन बुमराह का मामला अलग है। फिजियो ने उनके अंतरराष्ट्रीय भविष्य के लिए एक निश्चित खाका तैयार किया है जिसके तहत वह इंग्लैंड में केवल तीन टेस्ट मैच खेले। कई लोगों का मानना है कि इस पर एक निश्चित योजना बनाने का समय आ गया है कि इस प्रमुख तेज गेंदबाज का उपयोग कैसे किया जाए। बुमराह को करीब से देखने वाले एक पूर्व खिलाड़ी ने पीटीआई को बताया, 'टीम में उनकी अहमियत पर कोई संदेह नहीं है।

DPL में RCB के गेंदबाज ने मचाया कोहराम, अपनी जादुई बॉलिंग से यूं लिए 4 विकेट, विरोधियों की लंका लगा दी

एजेंसी नई दिल्ली

आउटर दिल्ली वॉरियर्स ने पुरानी दिल्ली 6 को दिल्ली प्रीमियर लीग-2025 (डीपीएल) के छठे मैच में 82 रन से करारी शिकस्त दी। यह इस सीजन आउट दिल्ली वॉरियर्स की पहली जीत रही, जिसके साथ टीम प्वाइंट्स टेबल में तीसरे पायदान पर है। टीम को सीजन के शुरुआती मुकाबले में न्यू दिल्ली टाइगर्स के हाथों 40 रन से हार झेलनी पड़ी थी। वहीं, सीजन का अपना पहला मैच गंवाकर पुरानी दिल्ली 6 प्वाइंट्स टेबल में सबसे निचले पायदान पर है। इस मैच में आउट दिल्ली वॉरियर्स की जीत में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के स्टार स्पिनर सुयष शर्मा ने अहम भूमिका निभाई। 149 रन के टारगेट का पीछा करते हुए पुरानी दिल्ली 6 की टीम 14.3 ओवरों में महज 66 रन पर सिमट गई। टीम ने 14 के स्कोर पर आरुष मल्होत्रा (5) का विकेट गंवाया, जिसके बाद विकेटों का पतझड़ लग गया। सलामी बल्लेबाज समर्थ सेठ ने 17 गेंदों में 18 रन की पारी खेली, जबकि ललित

यादव ने 24 गेंदों में 20 रन बनाए, लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सके। आउटर दिल्ली वॉरियर्स की ओर से सुयश शर्मा ने 17 रन देकर सर्वाधिक चार विकेट झटके, जबकि शौर्य मलिक ने तीन शिकार किए। इनके अलावा शिवम शर्मा और हर्ष त्यागी को एक-एक सफलता हाथ लगी। बता दें कि सुयष शर्मा के सामने पुरानी दिल्ली 6 के खिलाड़ी संघर्ष करते नजर आ रहे थे। शर्मा ने उनको अपनी जादुई गेंदों में उलझा रखा था। अरुण जेटली स्टेडियम में मंगलवार को टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने उतरी आउटर दिल्ली वॉरियर्स की टीम 148 के स्कोर पर सिमट गई। इस टीम ने पूरे 20 ओवर खेले। प्रियांश आर्य ने सनत सांगवान के साथ पहले विकेट के लिए 45 रन की साझेदारी की। प्रियांश 16 रन बनाकर आउट हुए, जबकि सांगवान ने 15 गेंदों में ताबड़तोड़ 26 रन बनाए। उनकी इस पारी में दो छक्के और इतने ही चौके शामिल रहे। टीम के लिए कप्तान सिद्धांत शर्मा ने 14 गेंदों में 21 रन की पारी खेली, जबकि हर्ष त्यागी ने 17 और ध्रुव सिंह ने 19 रन का योगदान दिया। विपक्षी टीम की ओर से उद्धव मोहन ने 26 रन देकर सर्वाधिक पांच विकेट झटके, जबकि रजनीश दादर और प्रदीप पाराशर ने दो-दो विकेट अपने नाम किए।

आगे से खिलाड़ियों को अपनी मर्जी से मैच चुनने की अनुमति नहीं! इंग्लैंड सीरीज के बाद एक्शन में BCCI

एजेंसी नई दिल्ली

गौतम गंभीर हमेशा से भारतीय क्रिकेट में मेगा स्टार संस्कृति के खिलाफ रहे हैं लेकिन इंग्लैंड दौरे पर मोहम्मद सिराज के लगातार अच्छे प्रदर्शन से भारत के मुख्य कोच को अब अपने हिसाब से 'टीम कल्चर' बनाने का मौका मिल गया है । इंग्लैंड से सीरीज 2-2 से ड्रॉ कराने के बाद गंभीर और चयन समिति के प्रमुख अजित अगरकर टीम में जरूर ऐसा माहौल बनाना चाहेंगे जिसमें सभी को बराबर माना जाये। समझा जाता है कि चयन समिति, गंभीर और भारतीय क्रिकेट के आला अधिकारी कार्यभार प्रबंधन के नाम पर खिलाड़ियों के मर्जी से मैच और सीरीज खेलने के चलन पर रोक लगाने को लेकर एकमत हैं । बीसीसीआई के एक सीनियर अधिकारी ने कहा ,'इस पर बात हुई है और केंद्रीय अनुबंध प्राप्त खिलाड़ियों को बता दिया गया है , खास तौर पर उनको जो सभी प्रारूपों में नियमित खेलते हैं कि भविष्य में अपनी मर्जी से मैच चुनने का कल्चर नहीं चलेगा।' उन्होंने कहा ,'इसके यह मायने नहीं हैं कि कार्यभार प्रबंधन पर ध्यान नहीं दिया जायेगा। तेज गेंदबाजों का कार्यभार प्रबंधन जरूरी है लेकिन इसकी आड़ में खिलाड़ी अहम मैचों से बाहर नहीं रह सकते।' इंग्लैंड के खिलाफ मोहम्मद सिराज ने पांच टेस्ट में 185.3 ओवर डाले जिसके अलावा नेट्स पर गेंदबाजी और फील्डिंग अलग। उन्होंने फिटनेस के नये मानदंड कायम किये। सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा और आकाश दीप के प्रदर्शन ने साबित कर दिया कि बड़े से बड़े सितारे भी खेल से बढकर नहीं हैं । इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने भी कई दिक्कतों के बावजूद चौथे टेस्ट तक काफी लंबे स्पैल डाले। इससे यह सवाल उठना लाजमी है कि क्या कार्यभार प्रबंधन को अपनी सहूलियत के हिसाब से ढाल बनाया जाता है। भारत के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने 'इंडिया टुडे' से कहा ,'जब आप देश के लिये खेल रहे हैं तो दर्द भूल जाइये । क्या आपको लगता है कि सीमा पर जवान ठंड की शिकायत करेंगे । ऋषभ पंत ने आपको क्या दिखाया । वह फ्रेक्चर के बावजूद बल्लेबाजी के लिये आया । खिलाड़ियों से इसी की अपेक्षा की जाती है । भारत के लिये खेलना गर्व की बात है।' उन्होंने कहा ,'आप 140 करोड़ लोगों के प्रतिनिधि हैं और यही हमने मोहम्मद सिराज में देखा । सिराज ने कार्यभार की तमाम बातों को धता बताते हुए दिलेरी से गेंदबाजी की। लगातार पांच टेस्ट में सात आठ स्पैल डाले क्योंकि देश को इसकी अपेक्षा थी। उम्मीद है कि यह कार्यभार शब्द भारतीय क्रिकेट के शब्दकोष से गायब हो जायेगा।' यह भी कहा जा सकता है कि जसप्रीत बुमराह का पांचों टेस्ट में नहीं खेलने का फैसला बीसीसीआई को रास नहीं आया है। इससे बेंगलुरू के उत्कृष्टता केंद्र में काम कर रही खेल विज्ञान टीम पर भी ऊंगली उठी है।

हमारी टीम हवा में है... भारत ही पाकिस्तान के लिए बड़ा खतरा, राशिद लतीफ का एशिया कप पर ऐसा बयान

एजेंसी नई दिल्ली

पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान राशिद लतीफ का मानना है कि 14 सितंबर को एशिया कप में चिर प्रतिद्वंद्वी भारत के खिलाफ होने वाले मुकाबले में पाकिस्तान को कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा। लतीफ ने कहा, 'टीम इंडिया हाल के मैचों में अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन से काफी दूर रही है और उसे अपने प्रदर्शन में बदलाव की जरूरत है। इसके बावजूद पाकिस्तान के लिए भारत के साथ होने वाला मैच आसान नहीं होने वाला।' लतीफ ने तंज भरे लहजे में कहा, 'पाकिस्तान की मौजूदा अनिश्चित फॉर्म को देखते हुए, वह बस यही उम्मीद कर रहे हैं कि टूर्नामेंट सुचारू रूप से आगे बढ़े। पाकिस्तान के लिए 14 सितंबर को एक मजबूत भारतीय टीम के खिलाफ खेलना बहुत मुश्किल होगा। एशिया कप हो जाए बस। पाकिस्तान के हालिया प्रदर्शन पर लतीफ ने कहा, 'हमारी क्रिकेट हवा में चल रही है। हम बांग्लादेश और वेस्टइंडीज से हार गए। ऐसे मैच, जो हमें कभी नहीं हारने चाहिए थे। हमारा कप्तान अच्छा हो सकता है, लेकिन

तीनों फॉर्मेट में तालमेल बिठाना आसान नहीं है। हमारे पास प्रतिभा है, लेकिन हम अभी तक सही फैसले नहीं ले पा रहे हैं।' पूर्व विकेटकीपर ने कहा, 'भारत-पाकिस्तान मैच पर पूरी दुनिया की नजर रहती है। लेकिन, हाल के दिनों में पाकिस्तान का जो प्रदर्शन रहा है। उससे हमारी चिंता बढ़ी हुई है। मुझे उम्मीद है कि पाकिस्तान जल्द लय हासिल कर लेगी।' पाकिस्तान का टी20 में हालिया प्रदर्शन चिंताजनक रहा है। बांग्लादेश ने तीन मैचों की टी20 सीरीज में पाकिस्तान को अपने घर में 2-1 से हराया। वहीं वेस्टइंडीज के खिलाफ 3 टी20 मैचों की सीरीज में पाकिस्तान को 2-1 से जीत मिली लेकिन सीरीज में उसका प्रदर्शन दबदबे वाला नहीं रहा था। यूएई में आयोजित होने वाले एशिया कप 2025 में पाकिस्तान अपना पहला मैच 12 सितंबर को ओमान के खिलाफ खेलेगा। इसके बाद 14 सितंबर को पाकिस्तान का मुकाबला भारत से है। भारत और पाकिस्तान के बीच अब तक 13 टी20 मैच खेले गए हैं। इस दौरान भारतीय टीम का दबदबा रहा है। टीम इंडिया ने 10 मैच जीते हैं जबकि पाकिस्तान 3 मैचों में विजयी रही है।

व्यापार

जापान को ठग चुके हैं ट्रंप, अब भारत की बारी... चीनी एक्सपर्ट ने ऐसे खोल दी अमेरिका की पोल

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत से निर्यात होने वाले सामान पर टैरिफ बढ़ाने की धमकी दी है। एक नई चेतावनी में उन्होंने 24 घंटे में ऐसा करने को कहा है। इसके पीछे भारत की ओर से रूसी तेल खरीद का हवाला दिया गया है। इसके बाद दोनों देशों के रिश्तों में तनाव बढ़ गया है। अमेरिका और भारत की इस तनातनी के बीच द चाइना मार्केट रिसर्च के संस्थापक शॉन रीन की प्रतिक्रिया आई है। उन्होंने भारत को चीन के साथ अपने रिश्तों को सुधारने की सलाह दी है। उनका कहना है कि ट्रंप भारत को ठीक वैसे ही दबाने की कोशिश कर रहे हैं जैसा उन्होंने जापान और चीन के साथ किया। ट्रंप की धमकी साबित करती है कि अमेरिका का किसी भी तरह से भरोसा नहीं किया जा सकता है। बता दें कि हाल में जापान और अमेरिका के बीच एक समझौता हुआ है। जानकारों की राय में यह पूरी तरह से अमेरिका के पक्ष में है। समझौते के जरिये अमेरिका ने जापान को ठग लिया। समझौते में ऐसी कई शर्तें हैं जो दिखाती हैं कि जापान ने अमेरिकी दबाव में आकर समझौता कर लिया। इसी बीच ओआरएफ के हर्ष वी पंत ने लिखा है कि भारत को अमेरिका और चीन के

बीच संतुलन बनाने की जरूरत है। 2020 में गलवान घाटी में झड़प के बाद भारत और चीन के रिश्ते खराब हो गए थे। हालांकि, अब राजनयिक और आर्थिक प्रयासों से रिश्ते धीरे-धीरे सुधर रहे हैं। शॉन रेन अमेरिकी विदेश नीति के आलोचक हैं। उन्होंने सोमवार को भारत को चीन से अपनी रणनीतिक दूरी पर फिर से विचार करने की अपील की। शॉन ने कहा कि हाल के घटनाक्रम उनकी पहले की चेतावनियों को सही ठहराते हैं। 'द चाइना मार्केट रिसर्च' के फाउंडर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, 'मैं सालों से भारत को आगाह कर रहा हूं कि अमेरिका उसे ठीक उसी तरह घेरने की कोशिश करेगा जैसे उसने जापान के साथ किया और चीन के साथ करने की कोशिश कर रहा है या फिर आप ईयू की तरह जागीरदार बन सकते हैं।' उन्होंने आगे कहा, 'भारतीयों ने मुझ पर हमला किया और कहा कि चीन एक बड़ा खतरा है। लेकिन, ट्रंप की धमकी और टैरिफ के बाद कौन सही साबित हुआ? भारत को चीन के करीब जाना चाहिए।' रेन की प्रतिक्रिया ट्रंप के उस ऐलान के बाद आई है जिसमें उन्होंने रूसी तेल खरीद का हवाला देकर भारतीय वस्तुओं पर टैरिफ को बढ़ाने की बात कही है। ट्रंप ने कहा था, 'भारत न सिर्फ रूस से भारी मात्रा में तेल खरीद रहा है। अलबत्ता, खरीदे गए तेल का बड़ा हिस्सा खुले बाजार में बड़े मुनाफे के लिए बेच रहा है। उसे इस बात की परवाह नहीं है कि रूसी युद्ध मशीन से यूक्रेन में कितने लोग मारे जा रहे हैं।' मई में रेन ने एक इंटरव्यू में भी इसी तरह की बात कही थी। उन्होंने कहा था, 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अगले तीन से पांच सालों में भारत की अर्थव्यवस्था को चीन के करीब ले जाना चाहिए।' उन्होंने चेतावनी दी थी कि भारतीयों को अमेरिका पर भरोसा नहीं करना चाहिए। रेन बोले थे, 'अगर भारत बहुत शक्तिशाली हो जाता है जिसमें 10 से 20 साल लग सकते हैं तो अमेरिकी भारत को नष्ट करने और उसे घेरने की कोशिश करेंगे।'

24 घंटे में भारत के खिलाफ अमेरिका का बड़ा ऐक्शन, ट्रंप ने रूसी तेल पर दी अब ये धमकी

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका भारत के खिलाफ 24 घंटे के भीतर बड़ा ऐक्शन लेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दोबारा भारत को धमकी दी है। रूस से तेल खरीद के कारण ट्रंप ने ऐसा करने को कहा है। ट्रंप का कहना है कि वह अगले 24 घंटों में भारत पर लगाए जाने वाले टैरिफ को 'काफी बढ़ा देंगे'। यह कदम भारत की ओर से रूस से तेल खरीदने के जवाब में है। इसे ट्रंप प्रशासन यूक्रेन पर रूसी आक्रमण का समर्थन मानता है। भारत की ओर से रूसी तेल खरीद पर ट्रंप का रुख सख्त हो गया है। 24 घंटे के भीतर भारत को उन्होंने दोबारा चेतावनी दी है। वह चाहते हैं कि भारत रूस से तेल खरीदना बंद करे। ट्रंप ने भारत पर रूस से भारी मात्रा में तेल खरीदकर उसे अंतरराष्ट्रीय बाजार में ज्यादा कीमत पर बेचने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि भारत इस तरह से यूक्रेन युद्ध का फायदा उठा रहा है। इससे रूसी युद्ध मशीनरी को आर्थिक मदद मिल रही है। भारत ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया दी थी। उसने कहा था कि अमेरिका और यूरोप आज भी रूस से व्यापार कर रहे हैं। वहीं,

भारत से उनकी अपेक्षा उलटी है। अमेरिका की मांग को कई बार भारत अनुचित बता चुका है। भारत के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए ट्रंप ने भारतीय सामानों पर 25% टैरिफ लगाने का ऐलान किया है। अब ट्रंप ने इस टैरिफ को अगले 24 घंटों में और भी 'काफी ज्यादा' बढ़ाने की बात कही है। इसके पहले ट्रंप ने ट्रूथ सोशल पर भारत पर यूक्रेन युद्ध का फायदा उठाने का आरोप लगाया था। भारत का तर्क है कि उसने रूस से तेल खरीदना इसलिए शुरू किया क्योंकि यूक्रेन युद्ध के बाद पारंपरिक सप्लायर (जैसे मिडिल ईस्ट के देश) यूरोप की जरूरतों को पूरा करने में लग गए थे। उसका यह कदम अपने नागरिकों के लिए ऊर्जा की सस्ती और स्थिर सप्लाई सुनिश्चित करने के लिए जरूरी था। भारत ने यह भी साफ किया कि अमेरिका और यूरोपीय संघ (ईयू) खुद भी रूस के साथ बड़े पैमाने पर व्यापार कर रहे हैं। इसमें परमाणु ईंधन, पैलेडियम और उर्वरक जैसी चीजें शामिल हैं। ऐसे में सिर्फ भारत को निशाना बनाना डबल स्टैंडर्ड है। यह पूरा विवाद ट्रेड और भू-राजनीति का मिलाजुला मामला है। इसके तहत ट्रंप भारत पर रूस से दूरी बनाने का दबाव बना रहे हैं। वहीं भारत अपने आर्थिक और राष्ट्रीय हितों को वरीयता देने की बात पर अड़ा हुआ है।

जिस दिन आए अडानी पोर्ट्स के नतीजे, उसी दिन गौतम अडानी ने छोड़ा एग्जीक्यूटिव चेयरमैन पद

एजेंसी नई दिल्ली

गौतम अडानी ने अडानी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन (एपीएसईजेड) में एग्जीक्यूटिव चेयरमैन पद छोड़ दिया है। यानी अब वह कंपनी के एग्जीक्यूटिव चेयरमैन नहीं रहेंगे। वह कंपनी के मुख्य प्रबंधकीय पद से भी हट जाएंगे। कंपनी ने बताया कि बोर्ड ने गौतम अडानी को 5 अगस्त, 2025 से नॉन-एग्जीक्यूटिव चेयरमैन बनाने की मंजूरी दे दी है। दिलचस्प यह है कि इसी दिन कंपनी ने वित्त वर्ष 2025-26 की पहली के नतीजे भी जारी किए हैं। इसमें पिछले साल के मुकाबले 7% का मुनाफा हुआ है। हालांकि, इन नतीजों के बावजूद अडानी पोर्ट्स के शेयर 2.38% गिरकर बंद हुए। अडानी पोर्ट्स ने मनीष केजरीवाल को 5 अगस्त से तीन साल के लिए कंपनी का एडिशनल डायरेक्टर (नॉन-एग्जीक्यूटिव, इंडिपेंडेंट) नियुक्त किया है। शेयरधारकों की मंजूरी मिलने के बाद ही यह नियुक्ति पक्की होगी। मंजूरी तीन महीने के अंदर लेनी होगी। वहीं, गौतम अडानी इसी दिन से कंपनी के चेयरमैन नहीं रहेंगे। वह सिर्फ नॉन-एग्जीक्यूटिव चेयरमैन रहेंगे। मंगलवार को अडानी पोर्ट्स के नतीजे भी आए। चालू वित्त वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही में कंपनी का एकीकृत शुद्ध लाभ 6.54 फीसदी बढ़कर 3,310.60 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी का पिछले वित्त वर्ष 2024-25 की पहली (अप्रैल-जून) तिमाही में शुद्ध मुनाफा 3,107.23 करोड़ रुपये रहा था। एपीएसईजेड ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि समीक्षाधीन तिमाही में उसकी कुल आय बढ़कर 9,422.18 करोड़ रुपये हो गई। यह एक साल पहले इसी तिमाही में 8,054.18 करोड़ रुपये थी। कंपनी का खर्च भी सालाना आधार पर 4,238.94 करोड़ रुपये से बढ़कर 5,731.88 करोड़ रुपये हो गया। EBITDA 13% बढ़कर 5,495 करोड़ रुपये हो गया। अडानी के लॉजिस्टिक्स और मरीन बिजनेस में अच्छी ग्रोथ हुई है। इससे कंपनी को यह सफलता मिली है। अडानी पोर्ट्स के होल-टाइम डायरेक्टर और सीईओ अश्विनी गुप्ता ने कंपनी की आय में हुई बढ़ोतरी पर बात की। उन्होंने कहा, 'इस तिमाही में 21% की आय बढ़ोतरी हमारे लॉजिस्टिक्स और मरीन बिजनेस की वजह से हुई है। ये 2 गुना और 2.9 गुना बढ़े हैं।'

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक दयाराम दिव्य द्वारा मुद्रक वेदांत प्रभाकर, मेधा कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, ऑफिस नं. 128, वार्ड नं. 25, नंदभवन कांवाखेड़ा पार्क के पास, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं एस-20, प्रतापनगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक दयाराम दिव्य 96949 57624, 87695 58132 * PRB एक्ट के तहत ख़बरों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा